सुविचार- अगर आप दूसरों के बारे में भी सोचते हैं तो आप सच्चे इंसान हैं.

कहानी

आरव और आम का बगीचा

एक समय की बात है, एक छोटे से सुंदर गाँव में आरव नाम का एक लड़का रहता था. वह बहुत ही नटखट और चंचल स्वभाव का था. पूरे गाँव में उसकी शरारतों की चर्चा रहती थी. कभी वह किसी के दरवाज़े पर पत्थर मारकर भाग जाता, तो कभी खेतों में घुसकर फसल को नुकसान पहुँचा देता. उसकी माँ उसे बार-बार समझाती, 'बेटा, दूसरों को दुख देकर कभी खुशी नहीं मिलती,' लेकिन आरव इन बातों को हँसी में उड़ा देता था.

गाँव के बाहर एक बहुत बड़ा और घना आम का बगीचा था. उस बगीचे की देखभाल एक बुज़ुर्ग दादा जी करते थे, जिन्हें सब 'दादा जी' कहकर बुलाते थे. वे बहुत ही दयालु और शांत स्वभाव के थे. गाँव के सभी बच्चे उनसे प्यार करते थे क्योंकि वे उन्हें कभी-कभी मीठे आम भी खिलाते थे. लेकिन आरव का स्वभाव कुछ अलग ही था. वह वहाँ जाकर पेड़ों पर पत्थर मारता, कच्चे आम तोड़ता और कई बार पेड़ों की टहनियाँ भी तोड़ देता था. एक दिन दादा जी ने आरव को ऐसा करते हुए देख लिया. उन्होंने उसे डाँटा नहीं, बल्कि पास बुलाकर प्यार से कहा, 'बेटा, अगर तुम्हें आम चाहिए तो मुझसे माँग लो, लेकिन पेड़ों को नुकसान मत पहुँचाओ. ये पेड़ हमारे दोस्त होते हैं.' आरव ने उनकी बात सुनी, लेकिन बिना कुछ कहे मुस्कुराकर वहाँ से भाग गया.

कुछ दिनों बाद गाँव में बरसात का मौसम आ गया. चारों ओर हरियाली छा गई, लेकिन साथ ही तेज हवाएँ और आँधी भी आने लगीं. एक दिन आरव अपने दोस्तों के साथ खेलते-खेलते उसी बगीचे में पहुँच गया. उसके दोस्त तो खेलकर घर लौट गए, लेकिन आरव वहीं रुक गया और फिर से पेड़ों पर पत्थर मारने लगा. तभी अचानक तेज हवा चलने लगी. बादल गरजने लगे और बारिश शुरू हो गई. आरव घबराकर एक पेड़ के नीचे छिप गया. लेकिन वह पेड़ पहले से ही कमजोर था, क्योंकि उसकी कई टहनियाँ टूट चुकी थीं. अचानक एक ज़ोरदार हवा का झोंका आया और पेड़ जोर से हिलने लगा. आरव बहुत डर गया और भागने की कोशिश करने लगा, लेकिन उसका पैर फिसल गया और वह जमीन पर गिर पड़ा.

वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा और मदद के लिए पुकारने लगा. तभी पास से गुजर रहे दादा जी ने उसकी आवाज़ सुनी और तुरंत वहाँ पहुँचे. उन्होंने आरव को उठाया, उसे सहारा दिया और सुरक्षित जगह पर ले गए. आरव काँप रहा था और बहुत डर गया था. दादा जी ने उसे प्यार से समझाया, 'देखो बेटा, जब हम पेड़ों को नुकसान पहुँचाते हैं, तो वे कमजोर हो जाते हैं. अगर तुमने इन पेड़ों की टहनियाँ नहीं तोड़ी होतीं, तो यह पेड़ आज तुम्हें सुरक्षित रखता. पेड़ हमें फल, छाया और जीवन देते हैं, इसलिए हमें उनका ध्यान रखना चाहिए.'

आरव को अपनी गलती का एहसास हुआ. उसकी आँखों से आँसू बहने लगे. उसने दादा जी से माफी माँगी और कहा, 'दादा जी, अब मैं कभी भी पेड़ों को नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा. मैं आपकी मदद करूँगा और सबको भी समझाऊँगा.' अगले दिन से आरव सच में बदल गया. वह रोज़ बगीचे में जाकर दादा जी की मदद करता. वह पेड़ों को पानी देता, टूटे हुए हिस्सों को ठीक करता और बगीचे को साफ रखता. जब भी कोई बच्चा पेड़ों को नुकसान पहुँचाने की कोशिश करता, तो वह उन्हें प्यार से समझाता कि ऐसा करना गलत है. धीरे-धीरे पूरे गाँव ने आरव में आए इस बदलाव को देखा. जो लोग पहले उसकी शिकायत करते थे, अब उसकी तारीफ करने लगे. उसकी माँ भी बहुत खुश हुई और उसे गले लगाकर बोली, 'अब तुम सच में समझदार हो गए हो बेटा.' कुछ महीनों बाद, वही बगीचा पहले से भी ज्यादा हरा-भरा और सुंदर हो गया. पेड़ों पर ढेर सारे मीठे और रसदार आम लगे. दादा जी ने गाँव के सभी बच्चों को बुलाया और उन्हें आम खिलाए. उन्होंने खास तौर पर आरव को अपने पास बुलाकर कहा, 'तुमने अपनी गलती से सीख ली और खुद को बदल लिया, यही सबसे बड़ी बात है.'

आरव मुस्कुराया और बोला, 'दादा जी, अब मैं हमेशा अच्छे काम करूँगा.'

सीख

इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि हमें अपनी गलतियों से सीखना चाहिए और प्रकृति तथा दूसरों की चीज़ों का सम्मान करना चाहिए. अगर हम सच्चे दिल से बदलना चाहें, तो हम बेहतर इंसान बन सकते हैं और दुनिया को भी बेहतर बना सकते हैं.

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

उत्तर :- 1. फूल के रंग में अंतर, 2. केक में फर्क, 3. पीछे लगी खिड़की गायब, 4. दीवार पर लगी ईंटों की संख्या में अंतर, 5. लड़के के कपड़े और शरीर के रंग में अंतर

कविता

बचपन की खुशी

सुबह की धूप में खेलें हम,
हँसते-गाते झूमें हम.
रंग-बिरंगे सपने देखें,
नई दुनिया रोज़ देखें.

दोस्तों संग मस्ती करें,
छोटी-छोटी बातें करें.
पढ़ाई भी हम खूब करें,
हर दिन कुछ नया सीखें.

भूल भुलैया

रंग भरो

बिंदु मिलाओ

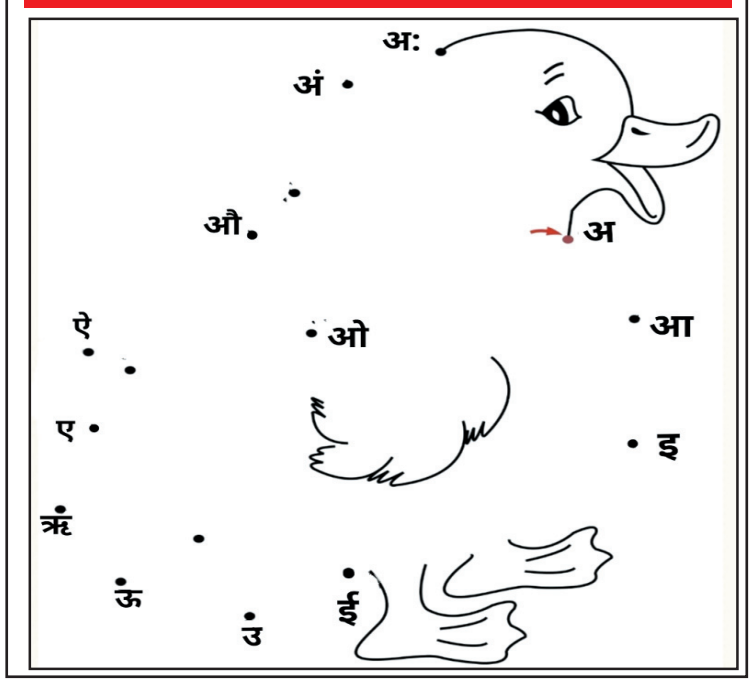

प्रेरक प्रसंग

सम्राट अशोक : एक महान शासक

सम्राट अशोक प्राचीन भारत के सबसे महान और प्रेरणादायक राजाओं में से एक थे. वे मौर्य वंश के राजा थे और उनके पिता का नाम बिंदुसार था. अशोक बचपन से ही बहुत साहसी और बुद्धिमान थे. उन्हें युद्ध कला में बहुत रुचि थी और वे एक कुशल योद्धा बने. अशोक ने अपने जीवन की शुरुआत एक कठोर और शक्तिशाली शासक के रूप में की.

उन्होंने अपने राज्य को बढ़ाने के लिए कई युद्ध लड़े. इनमें सबसे प्रसिद्ध युद्ध कलिंग युद्ध था. यह युद्ध बहुत भयानक था और इसमें हजारों लोग मारे गए. जब अशोक ने युद्ध के बाद मैदान में फैली लाशें और लोगों का दुख देखा, तो उनका दिल बदल गया. उन्हें अपनी गलती का एहसास हुआ और वे बहुत दुखी हुए.

यही वह समय था जब अशोक के जीवन में बड़ा परिवर्तन आया. उन्होंने फैसला किया कि अब वे कभी युद्ध नहीं करेंगे और हमेशा शांति का रास्ता अपनाएंगे. उन्होंने बौद्ध धर्म को अपनाया और भगवान बुद्ध की शिक्षाओं पर चलना शुरू किया. वे लोगों को प्रेम, दया और अहिंसा का संदेश देने लगे.

अशोक ने अपने राज्य में कई अच्छे काम किए. उन्होंने सड़कों का निर्माण कराया, पेड़ लगवाए, कुएँ और अस्पताल बनवाए ताकि लोगों को सुविधा मिल सके. उन्होंने जानवरों के लिए भी अस्पताल बनवाए, जो उस समय बहुत बड़ी बात थी. वे चाहते थे कि उनके राज्य के सभी लोग खुश और सुरक्षित रहें.उन्होंने अपने संदेश को लोगों तक पहुँचाने के लिए पत्थरों और स्तंभों पर लेख खुदवाए, जिन्हें अशोक के शिलालेख कहा जाता है. इन शिलालेखों में उन्होंने लोगों को सच्चाई, ईमानदारी, दया और सम्मान के साथ जीवन जीने की सीख दी.

अशोक ने अपने धर्म के संदेश को केवल भारत में ही नहीं, बल्कि अन्य देशों में भी फैलाया. उन्होंने अपने दूतों को श्रीलंका और अन्य जगहों पर भेजा ताकि लोग शांति और प्रेम का महत्व समझ सकें.

उनके बेटे महेंद्र और बेटी संघमित्रा ने भी इस काम में उनकी मदद की.सम्राट अशोक का जीवन हमें यह सिखाता है कि इंसान कभी भी बदल सकता है. गलती करने के बाद उसे सुधारना ही सबसे बड़ी बात होती है. उन्होंने शक्ति से ज्यादा शांति को महत्व दिया और एक आदर्श शासक बने.

आज भी अशोक का नाम सम्मान के साथ लिया जाता है. उनका 'अशोक चक्र' भारत के राष्ट्रीय ध्वज में भी बना हुआ है, जो हमें सच्चाई और धर्म के रास्ते पर चलने की प्रेरणा देता है.

जानकारी

गुड़हल : सुंदर और उपयोगी

गुड़हल का फूल, जिसे कई जगहों पर जासौन का फूल भी कहा जाता है, एक बहुत ही सुंदर और उपयोगी फूल है. इसका वैज्ञानिक नाम हिबिस्कुस है. यह फूल आमतौर पर लाल रंग का होता है, लेकिन यह सफेद, पीला, गुलाबी और नारंगी रंगों में भी पाया जाता है. गुड़हल का पौधा झाड़ी के रूप में होता है और इसे घरों, बगीचों और मंदिरों के आसपास आसानी से उगाया जा सकता है. गुड़हल का फूल भारत में बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है. इसे पूजा-पाठ में खास स्थान दिया जाता है, विशेष रूप से देवी-देवताओं को अर्पित करने के लिए. यह फूल भगवान गणेश और माँ काली को चढ़ाया जाता है, इसलिए इसका धार्मिक महत्व भी बहुत अधिक है.

यह फूल केवल सुंदर ही नहीं, बल्कि स्वास्थ्य के लिए भी बहुत लाभकारी होता है. गुड़हल की पंखुड़ियों का उपयोग आयुर्वेद में औषधि बनाने के लिए किया जाता है. इससे बनाई गई चाय (हिबिस्कस टी) पीने से शरीर को ठंडक मिलती है और रक्तचाप को नियंत्रित करने में मदद मिलती है. यह बालों के लिए भी बहुत फायदेमंद है. गुड़हल के फूल और पत्तियों से बना तेल बालों को मजबूत बनाता है, बालों का झड़ना कम करता है और उन्हें चमकदार बनाता है.

गुड़हल का उपयोग त्वचा की देखभाल में भी किया जाता है. इसके फूल से बना पेस्ट चेहरे पर लगाने से त्वचा मुलायम और साफ होती है. यह प्राकृतिक रूप से त्वचा को निखारने में मदद करता है और किसी प्रकार के साइड इफेक्ट भी नहीं होते. इस पौधे को उगाना बहुत आसान है. इसे धूप और नियमित पानी की जरूरत होती है. यह गर्म जलवायु में अच्छी तरह बढ़ता है. अगर इसकी सही देखभाल की जाए, तो यह पूरे साल फूल देता रहता है और बगीचे की सुंदरता बढ़ाता है. गुड़हल का फूल हमें यह सिखाता है कि प्रकृति ने हमें कई ऐसी चीजें दी हैं जो सुंदर होने के साथ-साथ उपयोगी भी हैं. हमें इनका सही उपयोग करना चाहिए और पर्यावरण की रक्षा करनी चाहिए. यह फूल न केवल हमारे आसपास की सुंदरता बढ़ाता है, बल्कि हमारे स्वास्थ्य और जीवन को भी बेहतर बनाता है.

कागज संबंधी रोचक तथ्य

- कागज का आविष्कार लगभग 2000 साल पहले चीन में हुआ था.
- सबसे पहले कागज पेड़ की छाल और कपड़े से बनाया जाता था.
- आज भी कागज बनाने के लिए मुख्य रूप से पेड़ों का उपयोग होता है.
- एक टन कागज बनाने में लगभग 17 पेड़ लगते हैं.
- कागज को रीसायकल (पुनः उपयोग) किया जा सकता है.
- रीसायकल कागज बनाने में कम पानी और ऊर्जा लगती है.
- दुनिया में सबसे ज्यादा कागज का उपयोग शिक्षा और पैकेजिंग में होता है.
- कागज कई प्रकार का होता है, जैसे अखबार, कार्डबोर्ड और टिश्यू पेपर.
- कागज को लंबे समय तक सुरक्षित रखने के लिए सूखी जगह जरूरी होती है.
- अगर हम कागज बचाएँ, तो पेड़ों और पर्यावरण की रक्षा कर सकते हैं.

बूझो तो जानें

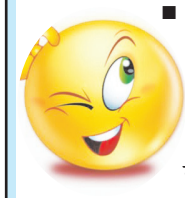

- मैं बिना पंख उड़ता हूँ, बिना आँख सब दिखता हूँ, मैं क्या हूँ?
  उत्तर: हवा
- जितना निकालो उतना बढ़ता है, मैं क्या हूँ?
  उत्तर: गड्ढा
- मैं दिन में दिखता हूँ, रात को नहीं, मैं कौन हूँ?
  उत्तर: सूरज
- बिना पैर के चलता हूँ, बिना रुके बहता हूँ, मैं क्या हूँ?
  उत्तर: नदी
- जो जितना खींचो उतना छोटा होता है, मैं क्या हूँ?
  उत्तर: सिगरेट
- मैं बोलता नहीं फिर भी सब समझते हैं, मैं क्या हूँ?
  उत्तर: किताब
- मैं हर जगह हूँ लेकिन दिखता नहीं, मैं ेक्या हूँ?
  उत्तर: हवा
- बिना आग के जलता हूँ, मैं क्या हूँ?
  उत्तर: बिजली का बल्ब
- मैं हर किसी के पास होता हूँ लेकिन एक जैसा नहीं, मैं क्या हूँ?
  उत्तर: नाम

हंसी-ठिठोली

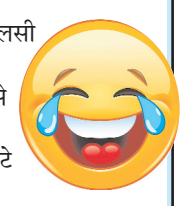

- पटीचर: बताओ सबसे आलसी कौन होता है?
  छात्र: जो जवाब देने से पहले सोचता भी नहीं!
- पत्नी: सुनो, आज मैंने 2 घंटे में खाना बनाया.
  पति: और मैंने 10 मिनट में खा लिया!
- पप्पू: मैं परीक्षा में फेल क्यों हो गया?
  टीचर: क्योंकि तुम उत्तर नहीं, सपना लिखते हो!
- डॉक्टर: तुम्हें आराम की जरूरत है.
  मरीज: तो मैं छुट्टी ले लूँ या नौकरी छोड़ दूँ?
- पापा: पढ़ाई कर लो वरना कुछ नहीं बनोगे.
  बेटा: चिंता मत करो पापा, मैं भी यूट्यूबर बन जाऊँगा!
- दोस्त 1: तुम्हारी मेमोरी कैसी है?
  दोस्त 2: कौन सीमेमोरी ?
- टीचर: होमवर्क क्यों नहीं किया?
  छात्र: क्योंकि किताब भी छुट्टी पर गई थी!
- पप्पू: मैं इतना तेज दौड़ता हूँ कि मेरी परछाई भी पीछे रह जाती है.
  मम्मी: फिर बिजली का बिल क्यों नहीं भागता?
- दुकानदार: क्या चाहिए?
  ग्राहक: कुछ ऐसा जो पैसे बचा दे.
  दुकानदार: तो घर बैठो!

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स, लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com **पर मेल करें.**

जानकारी

दिनांक 18 अगस्त 2023 को इसी डमी पर पेज लगाना है .
जो 19 अगस्त को प्रकाशित होगा .

पेज नंबर अपने हिसाब से बदल लें

पेज लगाते समय इन निर्देशों का पालन करना अनिवार्य है–
पेज लगाने के लिए नीचे पेज पर सारे बॉक्स और पाइंटर रखे हुए हैं . इनका ही प्रयोग करना है कलर नहीं बदलना, सिंगल डीसी कर सकते है .
(नोट–पाइंटर और बाक्स ऊपर दिए अनुसार ही लगाना है .)
किसी भी पेज में डेढ़ कालम या ढाई कालम खबर नहीं लगाना है .
पाइंटर बाक्स में दो से कम पाइंटर नहीं लेना है, अधिकतम 4 पाइंटर लगा सकते हैं (12 पाइंट सूर्या)
बाक्स की हैडिंग 16 पाइंट सूर्या एवं 20 पाइंट सूर्या ब्लैक में रखना है .
ऊपर की पट्टी से किसी भी तरह की छेड़छाड़ नहीं करना है .
ऊपर अंक वाला पाइंटर दिया है उसी अनुसार लगना है .
जहां आपके एडीशन में छोटी पट्टी जाती है वहां ऊपर रखी पट्टी में नाम लिख लें . (ऊपर के अनुसार)
ले आउट आकर्षक लगे इसका ध्यान रखना है, पेज एक की डमी संलग्न की जा रही है पैटर्न लगभग उसी अनुसार बनाने का प्रयास करें .
अपने एडीसन के ऐतिहासिक स्थलों की फोटो पट्टी पर लगा सकते हैं, जैसा भोपाल की पट्टी पर लगा है .